अनुक्रमणिका
कक्षा IX एवं X

विषय	पृ०सं०
1. मातृभाषा	
1.1 हिन्दी	1
1.2 उर्दू	12
1.3 बांगला	22
2. द्वितीय भारतीय भाषा	
2.1 संस्कृत	32
2.2 हिन्दी (द्वितीय भाषा)	43
3. अँग्रेजी	50
4. गणित	64
5. विज्ञान	76
6. समाज विज्ञान	92
परिशिष्टः	
I मूल्यांकन	114
II समय सारणी	122
III परीक्षा से संबंधित सामान्य अनुदेश	133

1. मातृभाषा (Mother Tongue)

मातृभाषा खंड में तीन भाषाओं को सम्मिलित किया गया है जो निम्नलिखित हैं—हिन्दी, उर्दू एवं बांगला। इस खंड से छात्र किसी एक भाषा का चयन करेंगे। इसे हिन्दी (मातृभाषा)/उर्दू (मातृभाषा)/बांगला (मातृभाषा) नाम से संबोधित किया गया है। यह पत्र 100 अंकों का होगा एवं उत्तीर्णांक 30 अंक होगा। इस खंड से एक भाषा लेना अनिवार्य होगा।

1.1 हिन्दी (मातृभाषा)

1. प्रस्तावना :

आठवीं कक्षा तक छात्र-छात्राओं में विचारगत एवं भाषागत प्रौढ़ता प्राप्त करने की ललक जग गई होती है। अतः माध्यमिक स्तर पर वे अपने प्रौढ़ विचारों की प्रभावी अभिव्यक्ति के लिए व्यग्र हो उठते हैं। वे अपने पढ़ने, लिखने अर्थात् सम्पूर्ण अभिव्यक्ति-कौशल को तो आकर्षक और प्रभावशाली बनाना ही चाहते हैं, दूसरों की भी अभिव्यक्ति-कौशलों के गुण-दोषों की आलोचना करने लग जाते हैं। यह वह स्तर होता है, जहाँ पर छात्र-छात्राओं में साहित्य के सौन्दर्यबोध का बीज अंकुरित होने लगता है। वे अपने परिवेश को लाँघते हुए उत्तरोत्तर अपने वृहत्तर समाज से जुड़ते जाते हैं और अपने अर्जित भावों और विचारों की रंग-बिरंगी पतंगों को अपने विशिष्ट भाषा-कौशलों की डोरों से अभिव्यक्ति के उन्मुक्त नील-गगन में उड़ाने लग जाते हैं। इसलिए इस स्तर पर मातृभाषा हिन्दी की पढ़ाई में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। ध्यान यह रखा गया है कि इस स्तर पर छात्र-छात्राओं को जो अध्ययन-सामग्री (पाठ्यक्रम) अभिस्तावित है, वह उनमें ऐसी व्यावहारिक योग्यता का विकास कर सके, जिसके द्वारा वे न केवल साहित्यिक बल्कि अपने और विश्व के सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक संदर्भों पर भी आत्मविश्वासयुक्त विचार-विमर्श कर सके।

2. पाठ्यक्रम के विविध आयाम

(क) ज्ञान विस्तार :

स्वभावतः विद्यालयीय शिक्षण में हिन्दी भाषा-साहित्य के शिक्षण के लिए विशेष सजगता, सावधानी और गंभीरता की आवश्यकता है। विद्यालयीय शिक्षा पूरी होने तक छात्र का भाषा और साहित्य विषयक बोध इतना विकसित हो जाना चाहिए कि उसमें गद्य-पद्य की किसी रचना के संबंध में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास उत्पन्न हो सके तथा वह निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त भी किसी रचना को पढ़कर उसके बारे में अपनी भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया दे सके, वह विविध विषय-क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा तथा भिन्न सन्दर्भों और जरूरतों के अनुसार अलग-अलग शैली रूपों से परिचित हो सके, वह हिन्दी भाषा की विशेषता, सूक्ष्मता और सौन्दर्य को पहचान और परख सके। भाषा के माध्यम से छात्र अपने यथार्थ जगत् को समझ सके और कल्पना के संसार की रचना कर सके। भाषा के द्वारा उसके ज्ञान क्षेत्र का इतना विस्तार हो जाए कि वह अखबारों में आनेवाले व्यक्ति, परिवेश, समाज, संस्कृति आदि की जानकारी रख सके और इस जानकारी में कहाँ-क्या बढ़ोतरी वांछित है, इसकी पहचान कर सके।

(ख) कौशल विस्तार :

स्कूली शिक्षा के दौरान हिन्दी भाषा में छात्र अपनी ऐसी दक्षता और पकड़ बना सके कि वह पाठक, श्रोता, वक्ता, लेखक और विश्लेषक के रूप में आत्मविश्वास अनुभव कर सके। आवश्यकता पड़ने पर वह अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकों आदि से सामग्री एकत्र कर उसका सटीक उपयोग कर सके। छात्र अपनी अर्जित भाषिक दक्षता और कौशल के बल पर वाद-विवाद, चर्चाओं, भाषणों आदि में समर्थ प्रतिभागिता का प्रमाण दे सके तथा व्यवस्थित तथा असरदार तरीके से अपने विचारों, भावों और संवेदनों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त कर सके। भाषा उसमें जरूरी मानसिक बौद्धिक गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को सम्पन्न बनाए।

(ग) रुचि और रुझान :

भाषा का शिक्षण ऐसा होना चाहिए कि छात्र में बिहार की बोलियों और अन्य भाषाओं की विविधता के प्रति स्वीकृति और सद्भाव-सम्मान का भाव बने तथा हिन्दी के सहारे अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं और उनके साहित्य के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा का भाव भी विकसित हो। हिन्दी भाषा और साहित्य के शिक्षण द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को जान-समझकर उनकी अच्छाइयों को आत्मसात कर सकने की मनोवृत्ति जन्म ले। जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच-नीच के संकीर्ण मनोभाव, धर्म-सम्प्रदाय को लेकर मन में गाँठ बना लेनेवाली कट्टरता, लिंग-भेद आदि विचलित हों और मन में सहिष्णुता, सद्भाव, उदारता और सहज अपनापन के भाव जन्में और बद्धमूल हों, तभी हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण सार्थकता प्राप्त कर सकता है।

(घ) पाठ्यपुस्तक :

विद्यालयीय छात्रों में उपर्युक्त योग्यता, दक्षता और सामर्थ्य विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकों, विशेषतः हिन्दी भाषा-साहित्य की पाठ्यपुस्तकों, में ऊपर चर्चित विशेषताओं का सन्निवेश हो। यह सच है कि पाठ्यपुस्तकें ही भाषा-साहित्य के शिक्षण का एकमात्र स्रोत नहीं होतीं, किन्तु वे प्राथमिक रूप से अधिकृत रूप में एक मार्ग, एक दिशा देती हैं और संबद्ध विषय में छात्रों के मानसिक-बौद्धिक अभिनिवेश में तत्काल सहायक होती हैं। इसलिए, उनमें संकलित रचनाएँ और अभ्यास-प्रश्न योग्य एवं उत्तरदायी व्यक्तियों द्वारा अत्यंत सावधानी और गंभीरता से तैयार किए जाएँ जो छात्रों में वांछित ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण, अभिरुचि, संस्कार और कौशल को बनाने-सँवारने और बढ़ाने में प्रधानतापूर्वक सहायक हों। पाठ्यपुस्तकें साधन और माध्यम के रूप में छात्रों में कक्षा-दर-कक्षा भाषा-सामर्थ्य को पैना, दृढ़तर और बहुमुखी बनाती चलें तथा उनमें साहित्य की प्रकृति, स्वरूप, प्रयोजन और उद्देश्य की समाज-संबद्ध, जिम्मेदार व संवादी चेतना अधिकाधिक गहरी और विकसित करती चलें।

इन पुस्तकों में कौतूहलपरक, जिज्ञासावर्धक तथा जीवन-जगत् के अनेकानेक सरोकारों वाली विविधतापूर्ण रचनाएँ शामिल हों और उनसे जुड़े हुए ऐसे अभ्यास-प्रश्न हों कि छात्र उन्हें तनावमुक्त सहजता से आत्मसात करते हुए उनपर भावात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें। रचनाओं के स्वरूप और चयन, उनकी क्रमव्यवस्था और विषय-वस्तु में यह ध्यान रखा जाय कि छात्र रचना पढ़ते समय अन्य विषयों की अवधारणाओं से उन्हें जोड़ पाएँ और दोनों के अंतःसम्बंध को देख सकें।

पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु के फलक इतने विस्तृत होने चाहिएँ कि उनमें आधुनिक समाज के विविध सरोकारों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हो, जैसे—पर्यावरण, परिवेश, संवैधानिक दायित्व, लोकसंस्कृति, व्यापार-वाणिज्य और विविध व्यवसाय, बाजार, सिनेमा, खेल-जगत्, नाटक, नृत्य, संगीत, उद्योग-धंधे, कृषि, मीडिया, विज्ञान जगत्, पर्वत-समुद्र-अंतरिक्ष, राजनीति, धर्म आदि; इन विषयवस्तुओं के द्वारा भाषा के विविध प्रयोगों, सन्दर्भों, उनकी शब्दावलियों और अवधारणाओं से छात्रों का परिचय हो और जीवन-जगत् के विविध रूपों को वे आत्मसात कर सकें।

पाठ्यपुस्तकों द्वारा मानसिक वातावरण निर्मित होता है और उनसे संबद्ध अभ्यास-प्रश्नों द्वारा छात्र विषयवस्तु को परखने, उनसे गहराई के साथ जुड़ने और उनके विश्लेषण का कौशल अपने में विकसित करते हैं। अभ्यास प्रश्नों द्वारा उनमें किसी रचना के बिन्दुवार परख-विश्लेषण, अवबोध तथा विषय के विविध पहलुओं को देखने और आँक सकने की अंतर्दृष्टि भी विकसित होती है।

(ङ) व्याकरण और रचना :

प्रायः यह तथ्य सर्वस्वीकृत है कि बच्चों में अपनी मातृभाषा के जरिये व्याकरण और रचना की एक आधारभूत सहज और अंतःस्फूर्त्त समझ होती है, सिर्फ उसे सचेत रूप से स्पष्ट करने, दिशा और विस्तार देने तथा समुचित अभ्यास द्वारा उसकी एक जागरूक समझ बनाने की आवश्यकता होती है। इसके लिए अलग से व्याकरण और रचना के नियमों की सैद्धांतिक समझ के लिए पाठ्यपुस्तक से बाहर का प्रयत्न छोड़कर उनके विविध पाठों पर ही आधारित अभ्यासों द्वारा व्यावहारिक समझ छात्रों में विकसित की जानी चाहिए। चूँकि ऐसी व्यावहारिक समझ और अभ्यासों के पूर्व संबद्ध व्याकरण विषयों की एक संक्षिप्त और सटीक सैद्धांतिक समझ भी आवश्यक है, इसलिए पाठ्यपुस्तक में ही व्याकरण के पाठ्य-विषयों से सम्बद्ध एक स्वतंत्र पाठ भी रखा जा सकता है। इस स्वतंत्र पाठ में व्याकरण के ऐसे विषय भी आ सकेंगे जिनके लिए पाठ्य-पुस्तक में संकलित पाठों द्वारा अभ्यास संभव न हो सके। एतदर्थ, पाठों के संग्रह-संकलन में सावधानी रखी जानी चाहिए। व्याकरण और रचना का ज्ञान अभ्यास साध्य होना चाहिए और कोशिश की जानी चाहिए कि यह ज्ञान और अभ्यास अरुचिकर या उबाऊ न हो। व्याकरण सहज साध्य बन सके, इसके लिए छात्रों को आपस में अथवा स्कूल से बाहर के लोगों के साथ वार्तालाप में भी सीखे हुए या अर्जित व्याकरण ज्ञान के सहज अनुपालन हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।

3. उद्देश्य :

- भाषा के कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना आदि सिखाना तथा सर्जनात्मक साहित्य से सम्बंधित आलोचनात्मक क्षमता का विकास करना—स्वतंत्र और मौलिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकने की क्षमता का विकास करना तथा राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भाषा आदि के प्रति संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टि का विकास करना,
- साहित्य की विविध विधाओं से छात्रों का परिचय कराना,
- छात्रों में सौन्दर्यप्रियता की भावना, मौलिकता, कल्पना और सर्जनात्मकता का विकास करना,
- भाषा-साहित्य के अध्ययन द्वारा छात्रों के मनोभावों को उदात्त बनाना, उनमें सद्वृत्तियों का विकास एवं चरित्र-निर्माण करना,
- राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र-गौरव एवं संस्कृति के प्रति अनुराग का विकास करना,
- संचार-माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी की प्रकृति से अवगत कराना। नये-नये तरीके से प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना,
- विदेशी भाषाओं के साथ-साथ अहिन्दी भाषाओं की संस्कृति से परिचय कराना,
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विभिन्न किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक एवं लिखित क्षमता का विकास करना,
- सघन विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति एवं तर्क-क्षमता का विकास करना,
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक दृष्टि का विकास करना,
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषा की विविध क्षमताओं के विकास की गति और प्रतिभा की पहचान करना,
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिन्दी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना, तथा
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भाषा के तर्कपूर्ण एवं संवेदनशील व्यवहार से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास करना।

परीक्षा का ढाँचा
वर्ग IX

इस पूरे पत्र को पाँच खंडों में विभक्त कर प्रत्येक खंड के सामने अंक और घंटियों की संख्या निर्धारित है :

	अंक	आवंटित घंटी
1. अपठित गद्यांश	20	35
2. रचना	15	30
3. व्याकरण	15	30
4. पाठ्य पुस्तक	40	75
5. पूरक पुस्तक	10	15

1. पहले प्रश्न में दो अपठित गद्यांश दिए जाएँगे जिनमें पहला अनिवार्यतः साहित्यिक होगा और जिसकी शब्द–संरचना 300–400 शब्दों की होगी। शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध, भाषिक संरचना पर आधारित लघु उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों की संख्या अधिकतम तीन होगी और प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

4+4+4=12

दूसरा अपठित गद्यांश वर्णानात्मक होगा जिसकी शब्द–संख्या 250–300 होगी। इस अंश से भी शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध और भाषिक संरचना पर आधारित दो लघु–उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

4+4=8

2. दूसरा प्रश्न रचना (क) निबंध–लेखन का होगा। निबंध–लेखन के लिए संकेत बिंदु दिये जाएँगे। निबंध की शब्द–संख्या 250–300 होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

10

रचना (ख) के प्रश्न संवाद अथवा पत्र–लेखन, औपचारिक अथवा अनौपचारिक, से संबंधित होंगे।

5

3. तीसरे प्रश्न में पठित व्याकरणिक प्रकरणों पर आधारित व्याकरण के तीन प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित होंगे। 5+5+5=15

व्याकरण के मुख्य बिन्दुः

लिंग, वचन, काल, विविध क्रियाएँ, वाच्य, संधि, समास, पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, लोकोक्तियाँ और मुहावरे।

किन्तु ध्यान रखा जाएगा कि इन प्रकरणों के प्रश्न यथासंभव पाठाधारित हों।

4. चौथे प्रश्न में पाठ्यपुस्तक से कुल 40 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के प्रकार और प्रत्येक के लिए अंक–व्यवस्था निम्नवत् होगी :

(i) दो पद्यावतरणों में से किसी एक पर अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न	4x2 = 8
(ii) निर्धारित कविताओं में से चार प्रश्न	4x3 = 12
(iii) किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न	4x2 = 8
(iv) गद्य–पाठों पर आधारित चार बोधात्मक प्रश्न	4x3 = 12
	कुल अंक : 40

5. पूरक पाठ्यपुस्तक– इससे दो प्रश्न पूछे जाएँगे, जो निम्नवत् होंगे :

(i) एक निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा जिसके लिए 4 अंक निर्धारित होंगे 4

(ii) पूरक पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो–दो अंकों के तीन लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनकी अंक–व्यवस्था इस प्रकार होगी : 2+2+2 = 6

कुल अंक : 10

पाठ्यपुस्तक– राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग IX की नयी हिन्दी पाठ्यपुस्तक / पूरक पाठ्यपुस्तक

वर्ग X

इस पूरे पत्र को पाँच खंडों में विभक्त कर प्रत्येक खंड के सामने अंक निर्धारित है :

	अंक	आवंटित घंटी
1. अपठित गद्यांश	20	35
2. रचना	15	30
3. व्याकरण	15	30
4. पाठ्य पुस्तक	40	75
5. पूरक पुस्तक	10	15

1. पहले प्रश्न में दो अपठित गद्यांश दिए जाएँगे जिनमें पहला अनिवार्यतः साहित्यिक होगा और जिसकी शब्द संरचना 300–400 शब्दों की होगी। शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध, भाषिक संरचना पर आधारित लघु उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों की संख्या अधिकतम तीन होगी और प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

4+4+4=12

दूसरा अपठित गद्यांश वर्णनात्मक होगा जिसकी शब्द–संख्या 250–300 होगी। इस अंश से भी शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध और भाषिक संरचना पर आधारित दो लघु–उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे। 5

4+4=8

2. दूसरे प्रश्न में रचना (क) निबंध–लेखन का होगा। निबंध–लेखन के लिए संकेत बिंदु दिये जाएँगे। निबंध की शब्द–संख्या (250–300) होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

10

रचना (ख) का प्रश्न संवाद अथवा पत्र–लेखन–औपचारिक अथवा अनौपचारिक–से संबंधित होगा।

5

3. तीसरे प्रश्न में पठित व्याकरणिक प्रकरणों पर आधारित व्याकरण के तीन प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित होंगे। 5+5+5=15

व्याकरण के मुख्य बिन्दुः

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, कारक, काल, संधि, समास, लोकोक्ति, मुहावरा, शब्द–शुद्धि, वाक्य–शुद्धि, कर्त्ता की 'ने' विभक्ति का प्रयोग, उपसर्ग, प्रत्यय, उपसर्ग–प्रत्यय में अंतर, संधि–समास में अंतर।

यह खंड समेकित होगा। वर्ग IX के लिए प्रस्तावित व्याकरणिक बिन्दुओं से भी प्रश्न पूछे जाएँगे।

4. चौथे प्रश्न में पाठ्यपुस्तक से कुल 40 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के प्रकार और प्रत्येक के लिए अंक–व्यवस्था निम्नवत् होगी :

(i) दो पद्यावतरणों में से किसी एक पर अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न 4x2 = 8

(ii) निर्धारित कविताओं में से चार प्रश्न 4x3 = 12

(iii) किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न 4x2 = 8

(iv) गद्य–पाठों पर आधारित चार बोधात्मक प्रश्न 4x3 =12

कुल अंक : 40

5. पाँचवे प्रश्न में पूरक पाठ्यपुस्तक–से दो प्रश्न पूछे जाएँगे, जो निम्नवत् होंगे :

(i) एक निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा जिसके लिए 4 अंक निर्धारित होंगे 4
(ii) पूरक पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो–दो अंकों के तीन लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे 2+2+2 = 6
कुल अंक : 10

पाठ्यपुस्तक– राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग **X** की नयी हिन्दी पाठ्यपुस्तक/पूरक पाठ्यपुस्तक

पाठ्यक्रम
वर्ग IX

पाठ्यपुस्तक

वर्ग IX (मातृभाषा) के लिए एक पाठ्य-पुस्तक होगी जिसमें गद्य, पद्य एवं व्याकरण से क्रमशः **9, 13 एवं 1—कुल 23 की संख्या में पाठ होंगे।** इसमें प्रमुख रचनाकारों की विविध विधाओं की रचनाएँ होंगी। राष्ट्रीय स्तर के बिहार के प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं को स्थान दिया जाएगा।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास-कार्य होगा जिसमें भाषा की नियमबद्ध प्रकृति से भी छात्रों को परिचित कराया जाएगा। परिशिष्ट के रूप में भिन्न ज्ञानानुशासनों में प्रयुक्त शब्दावलियों की सूची होगी।

इसके अतिरिक्त गद्य की एक पूरक पाठ्य-पुस्तक भी होगी।

गद्य—

6

1. राष्ट्रीयता से संबंधित निबंध
2. आत्मकथा/जीवनी
3. व्यंग्य
4. आँचलिक कहानी
5. गाँधी/विनोबा का जीवन-परिचय
6. मानवाधिकार से संबन्धित पाठ
7. नालंदा/विक्रमशिला जैसे ऐतिहासिक महत्त्व के विद्या-केन्द्रों का जीवंत परिचय
8. यात्रा-संस्मरण से संबंधित एक पाठ
9. एकांकी

पद्य

1. आदिकाल	—	एक कवि की एक रचना।
2. भक्तिकाल	—	दो कवियों की 6-7 रचनाएँ हो सकती हैं जिनमें एक सौंदर्यपरक रचना हो।
3. रीतिकाल	—	एक कवि की दो रचनाएँ जिनमें एक ओजपरक हो।
4. भारतेन्दु युग	—	एक कविता।
5. द्विवेदी युग	—	एक कविता।
6. छायावाद	—	दो कवियों की चार रचनाएँ।
7. प्रगतिवाद	—	एक कवि की एक कविता।
8. प्रकृति-वर्णन	—	एक कवि एक रचना।
9. आधुनिक काल	—	तीन कवियों की 4 या 5 रचनाएँ हो सकती हैं।

व्याकरण के बिंदु :

सभी पाठ के अन्त में पाठ से सम्बंधित लिंग, वचन, काल, परसर्ग, अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक एवं प्रेरणार्थक क्रियाओं के प्रयोग, वाच्य, संधि एवं समास, पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थक, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, मुहावरे आदि के प्रश्न एवं अभ्यास होंगे। सभी पाठों के अंत में पाठ से जुड़े अभ्यास के प्रश्न भी होंगे जिनके उत्तर रटन्त प्रथा से नहीं दिये जा सकेंगे।

काव्यशास्त्र : शब्द-शक्ति : अभिधा और लक्षणा; अलंकार : शब्दालंकार—अनुप्रास, यमक, श्लेष; मात्रिक छंद, यथा—दोहा; सोरठा; चौपाई; रोला और छप्पय।

पूरक-पाठ्य-पुस्तक :

बिहार के सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र के तीन महापुरुषों के बारे में चरितमूलक जीवनी, बिहार के तीन ऐतिहासिक महत्त्व के आख्यानों अथवा दो प्रसिद्ध राजाओं या शासकों के व्यक्तित्व एवं कार्यों के बारे में प्रामाणिक आरेखन करता हुए आलेख, दो धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र के एक संत या महापुरुष की जीवनी।

वर्ग X

पाठ्य-पुस्तक :

दशम वर्ग में बिहार एवं राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख रचनाकारों की विविध विधाओं से सम्बन्धित एक पाठ्य-पुस्तक होगी जिसमें पद्य के 14, गद्य के 9 एवं व्याकरण का 1—कुल 24 पाठ होंगे।

पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न दिये जायेंगे जिससे पाठगत संदर्भों वाले भाषिक-प्रयोगों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए भाषा की नियमबद्ध प्रकृति से परिचित कराया जायेगा। पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट के रूप में भिन्न ज्ञानानुशासनों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलियों की सूची होगी।

गद्य

1. एकांकी।
2. वैचारिक निबन्ध।
3. व्यंग्य।
4. राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े महापुरुषों की आत्मकथा या किसी रचना के अंश।
5. डायरी।
6. मानवाधिकार से सम्बंधित पाठ।
7. मर्मस्पर्शी कहानी।
8. ललित निबंध।
9. साहित्यकारों के साक्षात्कार विषयक एक पाठ।

पद्य

1. भक्तिकाल	—	दो कवियों की चार रचनाएँ
2. रीतिकाल	—	दो कवियों की दो रचनाएँ
3. छायावाद	—	दो कवियों की चार रचनाएँ
4. तार-सप्तक	—	एक कवि की एक रचना

5. प्रगतिवाद	—	एक कवि की एक या दो रचनाएँ।
6. नयी कविता	—	एक कविता।
7. समकालीन कविता	—	दो कवियों की एक-एक रचनाएँ।
8. साठोत्तरी कविता	—	दो कवियों की दो कविताएँ।

व्याकरण के बिंदु :

- भाषा और व्याकरण : अब तक सीखे व्याकरण के पुनरावृत्तिमूलक अभ्यास
- सन्धि—प्रकार सहित
- समास—रचना और प्रकार सहित
- संक्षेपण : अनेक तरह के गद्यावतरणों के संक्षेपण से संबद्ध अभ्यास
- पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द : उदाहृत वाक्यों में व्यवहृत शब्दों से ऐसे शब्दों की पहचान
- मुहावरे और लोकोक्तियाँ : वाक्य-प्रयोग
- पदबन्ध, वाच्य एवं उनके भेद, वाक्य-प्रकार एवं संशोधन पर प्रश्न, जिनके उत्तर अपनी संवेदना एवं अनुभव से दिए जा सकेंगे

काव्यशास्त्र : शब्द-शक्ति : व्यंजना; अलंकार : अर्थालंकार—वक्रोक्ति उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति विरोधाभास, वर्णिक छंद, यथा—इंद्रवज्रा; भुजंगप्रयात; मंदाक्रांता; मत्तगयंद सवैया और कवित्त (मदनमनोहर दण्डक) काव्यगुण।

पूरक-पाठ्य-पुस्तक :

गद्य की एक पूरक-पाठ्य पुस्तक होगी जिसमें हिन्दी से इतर भारतीय भाषाओं के साहित्य की चुनिंदा आठ कहानियाँ होंगी।

8

सतत व्यापक मूल्यांकन

वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना

वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना

बोलना

- भाषण, वाद-विवाद
- गति, लय, आरोह-अवरोह सहित सस्वर कविता-वाचन
- वार्तालाप और उसकी औपचारिकताएँ
- कार्यक्रम-प्रस्तुति
- कथा—कहानी अथवा घटना सुनाना
- परिचय देना, परिचय प्राप्त करना
- भावानुकूल संवाद-वाचन

वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी : वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा।

श्रवण (सुनना) का मूल्यांकन

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेंगे। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक सकता है। अनुच्छेद लगभग 200 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज पर दिए

हुए श्रवण बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास—रिक्त शब्द-पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि ढंगों के हो सकते हैं। आधे-आधे अंक के 10 प्रश्न होंगे।

वाचन (बोलना) का परीक्षण

- चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन (इस वर्णन की भाषा अनिवार्यतः वर्णनात्मक होगी)
- किसी चित्र विशेष को देखकर वर्णनात्मक प्रभावाभिव्यक्ति
- किसी विषय पर स्मरण के आधार पर बोलना
- कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना

टिप्पणी

1. परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
2. विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
3. निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों, जैसे : कोई चुटकुला या हास्य-प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी का सारांश सुनाना
4. जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के स्तर भेद का निर्धारण

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
• विद्यार्थी में परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता तो है, किन्तु आशय को संबंद्ध रूप में नहीं समझ पाता।	• विद्या में मात्र शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता तो है, किंतु वह उन्हें सुसम्बद्ध रूप में बोल नहीं पाता।
• लघु-लघु संबंद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	• परिचित संदर्भों में मात्र लघु-लघु संबंद्ध कथनों को सीमित शुद्धता के साथ प्रयोग करता है।
• परिचित या अपरिचित—दोनों प्रकार के संदर्भों में कथित सूचना की स्पष्टतः समझने की योग्यता तो है किंतु भाषागत अशुद्धियाँ भी हैं, जो भावाभिव्यक्ति में अवरोध उपस्थित करती हैं।	• लघु की अपेक्षा दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता लक्षित होती है किंतु संप्रेषण या अभिव्यक्ति में अवरोधक कुछ अशुद्धियाँ भी पायी जाती हैं।
• दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	• अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित का धारा-प्रवाह प्रस्तुत कर सकता है। कुछ अशुद्धियों के बावजूद सम्प्रेषण निर्बाध रहता है।
• उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता के साथ जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं की समझ।	• नगण्य अशुद्धियों से युक्त प्रसंग और श्रोता दोनों के अनुरूप भाषण-शैली का प्रमाण देता है।

4. अपेक्षित अधिगम

इन उच्च कक्षाओं तक पहुँचकर छात्र ज्ञान, समझ, सूचनाएँ और कौशल अथवा दक्षता के एक ऐसे सघन शिक्षण के दौर से गुजरेंगे और उनमें भाषा-साहित्य के माध्यम से समय, समाज और यथार्थ की एक ऐसी समझ विकसित होगी कि यह संभावना की जा सकेगी कि बच्चे मानसिक और बौद्धिक रूप से पर्याप्त वयस्क, सजग और जिम्मेदार हो सकेंगे। उनमें पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को लेकर एक जवाबदेही और गंभीरता का भाव आएगा

तथा राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की चेतना जगेगी। वे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, सीखना—इन तमाम स्तरों पर सजग होकर व्यक्ति के रूप में समाज की एक क्रियाशील एवं विवेकपूर्ण इकाई बन सकेंगे। इस चरण में बच्चों में सामाजिक, धार्मिक, लैंगिक और भाषायी सहअस्तित्व और सदभाव की एक सक्रिय और प्रभावी समझ जगेगी जिससे समाज एवं सभ्यता-संस्कृति की सकारात्मक शक्तियाँ संगठित हो सकेंगी। इस रूप में इन वर्गों के बाद बच्चे सच्चे अर्थों में राष्ट्र के एक उज्ज्वल भविष्य के आवश्यक आधार बन सकेंगे। उनमें नकारात्मक शक्तियों का रचनात्मक प्रतिरोध और प्रतिकार कर सकने की क्षमता भी जगेगी। वे सघन विश्लेषण, तर्कक्षमता एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति में समर्थ हो सकेंगे। इन वर्गों के पाठ्यक्रमों की संकल्पना ऐसी है कि उसके द्वारा छात्रों में साहित्य की विविध विधाओं की तात्त्विक और संरचनात्मक समझ जग सकेगी तथा भाषा और साहित्य की परंपराओं और प्रवृत्तियों की उनकी ऐतिहासिक जानकारी भी बढ़ेगी। व्याकरण और रचना के अपेक्षाकृत गहरे और विस्तृत ज्ञान तथा सम्बद्ध अभ्यासों द्वारा भाषा-साहित्य पर उनका अधिकार भी अधिक बढ़ेगा। इस चरण में कविताओं के वाचन, प्रदत्त विषय पर भाषण और वक्तृता, लेखन के विविध रूपों के अभ्यास द्वारा सामर्थ्य की अभिवृद्धि, साहित्य के अतिरिक्त सह-शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा परिचर्चा, संगोष्ठी आदि के साथ विविध कलाओं और रचनात्मक कार्यों से संबंधित अभिरुचियाँ, कौशल आदि भी बढ़ेंगे। वे नैतिकता, सौंदर्यबोध, समन्वित विवेक और कर्म-कौशल के विश्वसनीय परिचायक और स्रोत बन सकेंगे। पाठों के संकलन में प्रकृति, जीवन-जगत् और सभ्यता की समसामयिक वास्तविकताओं के वैविध्यपूर्ण प्रतिनिधित्व का ध्यान इसलिए रखा गया है कि छात्र इनसे न केवल परिचित हों, बल्कि इन सबसे खुद को जुड़ा हुआ भी देखें, समझें और अनुभव करें। इन सब के प्रति जिम्मेदारी एवं जवाबदेही के भाव भी उनमें आएँ।

5. पाठ्यसामग्री चयन हेतु आवश्यक सुझाव

प्रस्तावित पाठ्यक्रम के तीनों चरणों की पाठ्यसामग्री के लिये मुख्य रूप से तीन स्रोत होने चाहिएँ। पहला स्रोत अन्तर्भारतीय हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का सुप्रतिष्ठित लिखित कोश, दूसरा स्रोत हिन्दी की सामान्य रूप से विभाषाओं (बोलियों), विशेष रूप से बिहार की बोलियों के लिखित साहित्य की रूपान्तरित अथवा मौलिक रचनाएँ तथा तीसरा स्रोत उन रचनाओं का होगा जो आवश्यकतानुसार लेखकों द्वारा लिखवाई जाएँगी।

हिन्दी चूँकि राष्ट्रभाषा है, इसलिए हिन्दी भाषा-साहित्य के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप ही प्राप्त होना चाहिये। इसलिए, सत्तर प्रतिशत रचनाएँ हिन्दी की, पन्द्रह प्रतिशत रचनाएँ अन्तर्भारतीय साहित्य की, दस प्रतिशत रचनाएँ लोकभाषाओं अथवा बोलियों की और पाँच प्रतिशत रचनाएँ अन्तरराष्ट्रीय साहित्य से होनी चाहिएँ। निश्चय ही, हिन्दीतर स्रोतों से आने वाली रचनाएँ हिन्दी में भाषान्तरित होंगी। बिहार के परिप्रेक्ष्य में इतनी शिथिलता बरती जा सकती है कि यहाँ की बोलियों का लिखित साहित्य देवनागरी लिपि में भी लिया जा सकता है। हिन्दी की रचनाओं के चयन में विभिन्न कालों एवं विधाओं के बिहारी रचनाकारों का विशेष तौर पर ध्यान रखा जाना चाहिए; ताकि बिहार की भावी पीढ़ी अपनी समृद्ध विरासत से परिचित हो सके; साथ ही, हिन्दी की रचनाओं के चयन में हिन्दी की सभी विधाओं—यथा, कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, जीवनी, रिर्पोताज, यात्रा-वृतांत आदि का समुचित प्रतिनिधित्व मिल सके।

हिन्दी का इतिहास हजारों वर्षों में फैला हुआ है। उस में विविध भाषा-रूप और युग एवं प्रवृत्तियाँ हैं। अतः, हिन्दी रचनाओं के चयन में इसका ध्यान रखा जाना चाहिए कि आरम्भिक अपभ्रंशमूलक रूप को छोड़कर शेष सभी भाषा-रूपों, युगों और प्रवृत्तियों के साथ-साथ विविध सामाजिक स्तरों से आनेवाले लेखकों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में समावेशी प्रतिनिधित्व हो सके। हिन्दी भाषी समाज के ऐतिहासिक लोक-जागरण, उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी के नवजागरण, स्वाधीनता-आन्दोलन, जनतंत्र की स्थापना, किसान-मजदूरों, अल्पसंख्यकों, दलितों, महिलाओं के उत्थान से संबंधित सामाजिक आन्दोलनों और अभियानों की चेतना का संवाहक साहित्य पाठ्यक्रम में समाविष्ट हो सके, इसका विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

आज के नये दौर में भारतीय लोकतंत्र सामाजिक परिवर्तन, संक्रमण और विकास के एक नये चरण में प्रवेश कर चुका है, जहाँ जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, लिंग आदि से संबंधित भेद-भावों के लिए कोई जगह नहीं बची है। ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, सूचना और संचार के साथ ही व्यापार और वाणिज्य का बहुत विकास हुआ है। आधुनिकता के इन तमाम लक्षणों को निरूपित करनेवाला तथा इस विकास को वैज्ञानिक मानववादी दिशा में आगे बढ़ा ले चलने वाला साहित्य पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए।

पुरानी रचनाओं के साथ-साथ नई लिखी जानेवाली रचनाओं के संकलन और चयन में इसका विशेष ध्यान रखाा जाना चाहिए कि उनमें भाषा और साहित्य से संबंधित किसी भी तरह की संकीर्णता और कट्टरता को प्रश्रय न मिले और पाठ्यसामग्री, छात्रों को देश-दशा और युग-समय से काटनेवाली और निरी साहित्यिक न हों, बल्कि वह भाषा और साहित्य के बारे में व्यापक अवधारणाएँ लेकर चले। समाज, राजनीति, पर्यावरण, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान, तकनीक आदि जीवन जगत के विविध रूपों का उसमें समावेश किया जाना चाहिए ताकि ऐसा पाठ्यक्रम पढ़कर जो विद्यार्थी निकले, उसमें अपने अतीत (इतिहास), समय एवं समाज की साफ समझ हो। प्रस्तावित पाठ्यक्रम के निर्माण के पीछे की यही संकल्पना है।

♣

1.2 उर्दू (मातृभाषा)
1.2 Urdu (Mother Tongue)

اردو تعلیم: ضرورت اور مقاصد

اردو ہندستان کی مختلف زبانوں کے درمیان اپنی علاحدہ شناخت رکھتی ہے۔ اس زبان کے بولنے اور سمجھنے والے صرف ہندستان ہی نہیں، دنیا کے متعدد ملکوں میں پائے جاتے ہیں۔ اس کا ادب ابتدا سے ہی مقبول اور قابل قدر اہمیت کا حامل رہا ہے۔ اس کا بیش قیمتی اور وقیع ادبی سرمایہ دنیا کی کسی بھی ترقی یافتہ زبان کے مقابلے میں اعتماد و افتخار کے ساتھ پیش کیا جاسکتا ہے۔ چونکہ یہ زبان عربی، فارسی، ترکی، فرانسیسی اور دوسری ہندستانی زبانوں کے نرم و سبک الفاظ کی آمیزش سے بنی ہے، اس لیے اس کی شیرینی اور کشش دوبالا ہوگئی ہے۔ اس کے لب و لہجے میں وہ گھلاوٹ اور مٹھاس ہے جس کی ایک دنیا معترف ہے۔ یہی سبب ہے کہ دوسری زبانوں کے لوگ بھی اس سے متاثر ہوئے بغیر نہیں رہ سکتے۔ اردو ہماری مشترکہ تہذیب وتمدن کی پیداوار ہے۔ اس زبان نے ابتدا سے ہی ہم آہنگی، حب الوطنی، باہمی یگانگت اور اخوت کا پیغام عام کیا ہے۔ ماہرین لسانیات کے مطابق اس کا خمیر کھڑی بولی سے تیار ہوا ہے لیکن اس کی تعمیر وتشکیل میں جیسا کہ عرض کیا گیا عربی، فارسی، سنسکرت اور ترکی کے علاوہ دوسری کئی زبانوں کے الفاظ کا بہت اہم رول ہے۔ مذکورہ بالا خصوصیات کی بنا پر اس زبان کی تدریس اور اس کی تشہیر سے قومی یک جہتی کو فروغ حاصل ہوگا اور ملک کی بہبود اور سالمیت کو استحکام حاصل ہوگا۔

دنیا کے تمام ماہرین تعلیم اس بات پر متفق ہیں کہ طلبہ کی ذہنی نشوونما اور ان کی شخصیت کی تعمیر میں مادری زبان ہی سب سے زیادہ معاون ثابت ہوتی ہے۔ یہ ایک فطری بات ہے کہ طلبہ اپنی مادری زبان کو جس طور پر سمجھتے ہیں، شاید ہی کسی دوسری زبان کو سمجھ سکیں۔ استثنا کی بات اور ہے۔ اس لیے طالب علم جب اپنی مادری زبان میں کسی موضوع اور سبجیکٹ کو پڑھتا ہے تو بہت تیزی اور آسانی سے اس کی تفہیم ہوتی ہے۔ بچے جب اسکول میں داخلہ لیتے ہیں تو ابتدا میں ان کی ذہنی سطح پختہ نہیں ہوتی۔ شروع میں مادری زبان کی سطح پر بھی وہ ابتدائی منزلیں طے کر رہے ہوتے ہیں۔ لہٰذا زبان کی تدریس کا سب سے پہلا اور اہم مقصد یہ ہوتا ہے کہ طلبہ اپنی عمر اور جماعت کے مطابق صحیح پڑھنا، صحیح بولنا اور درست املا لکھنا سیکھ لیں۔ ساتھ ہی ان کے سوچنے سمجھنے اور درست نادرست کو پرکھنے کی صلاحیت بھی بڑھتی جائے۔ اور وہ بہ آسانی کسی بات کو سن کر اسے سمجھ لیں اور روزمرّہ کے تجربات ومشاہدات کو اپنی زبان میں ربط کے ساتھ بیان کرنے اور انھیں تحریری شکل دینے میں بہت حد تک کامیاب ہو جائیں۔ زبان سیکھنے کے ساتھ طلبہ اپنے ماحول، گرد و پیش اور دوسرے کوائف سے بھی واقف ہوتے ہیں۔ اس کے ساتھ وہ

سماجی و تہذیبی قدروں سے بھی بحسن و خوبی آشنا ہو جاتے ہیں۔ ابتدائی مرحلے کے بعد طلبہ کی ذہنی وسعت میں اضافہ کے لیے انھیں صوبائی اور ملکی حالات سے باخبر کرانا لازمی ہوتا ہے۔ تدریس کے اہم مقاصد میں ایک اہم مقصد یہ بھی ہے کہ طلبہ رفتہ رفتہ اپنے ملک کے مختلف حصوں اور خطوں میں بسنے والے مختلف فرقوں، طبقوں اور قبیلوں کی بابت معلومات حاصل کریں۔ ان کے رہن سہن، ان کی طرز رہائش اور طور طریقے کی جانکاری حاصل کریں اور سبھوں کے جذبات واحساسات اور عقائد کا احترام کرنا سیکھیں۔ تعلیم کا ایک بنیادی مقصد یہ بھی ہے کہ باہمی میل جول اور بھائی چارہ کے ماحول کو فروغ دیا جائے اور امن و آشتی کی فضا سازگار بنائی جائے۔ ان کے جذبۂ حب الوطنی کو تحریک دی جائے۔ آئین کے ذریعے دیے گئے حقوق، فرائض اور اختیارات سے آگاہ کیا جائے۔

ہمارا ملک طویل جنگ آزادی کے بعد انگریزوں کے چنگل سے آزاد ہوا ہے۔ ملک عزیز کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرانے کے لیے ہمارے بزرگوں نے اپنی جانیں قربان کی ہیں۔ تب جا کر ہم آزاد ملک کے باشندہ کہلانے کے لائق ہوئے۔ اس لیے طلبہ میں آزادی کا احترام اور اس کے تحفظ کا جذبہ پیدا کرنا اور ملک کے آئین کے تئیں انھیں باخبر کرنا لازمی ہے۔ حقوق کی شناخت کے ساتھ ان میں فرائض کی ادائیگی کا چلن بھی راہ پائے، اس کے لیے مناسب ذہن سازی ہونی چاہیے۔ ساتھ ہی ساتھ طلبہ کی تعلیم و تربیت اس نہج پر ہو کہ ان کا مزاج حقیقت پسندانہ، سائنسی اور منطقی ہو سکے۔

طریقۂ تدریس

درس و تدریس کا کام بہت ہی محنت، توجہ اور ہنرمندی کا متقاضی ہے۔ ابتدا میں بچوں کا ذہن کورا ہوتا ہے۔ ان کے اذہان نئی چیزوں کو سیکھنے کے لیے پوری طرح تیار نہیں ہوتے ہیں۔ ساتھ ہی ان کے اندر استاد کا خوف ہر دم بیٹھا رہتا ہے۔ جھجک، گھبراہٹ اور شرمیلا پن بھی موجود ہوتا ہے۔ اس لیے استاد کو چاہیے کہ بچوں کے درمیان وہ اس طرح خود کو پیش کرے کہ بچے اسے اپنا دوست سمجھیں۔ ان کے دل سے ڈر اور جھجک جاتا رہے اور وہ حوصلے اور اُمنگ کے ساتھ سیکھنے کے مرحلے سے گزرتے رہیں۔ استاد کو ان کی ذہنی سطح کو ہمہ وقت پیش نظر رکھنا چاہیے اور یہ مان کر چلنا چاہیے کہ ان سے قدم قدم پر غلطیاں سرزد ہوں گی۔ وہ غلطیاں پڑھنے لکھنے میں ہوں یا افعال و کردار میں، بچوں کے ذریعے کچھ بھی ممکن ہے۔ اس موقعے سے استاد کو بہت ہی صبر اور تحمل سے کام لینا ہوگا۔ غصہ، جھلاہٹ اور مار پیٹ کی جگہ انھیں حکمت اور تدبیر سے قابو میں کرنا ہوگا۔ بچوں کو پیار اور ہمدردی سے مخاطب کرنا، ان کے ساتھ ہنسنا بولنا، ان کے حق میں بہت مفید ہوگا اور وہ بخوشی استاد کی بات سننے، سمجھنے اور پھر اس پر عمل کرنے کے لیے راضی ہو جائیں گے۔ درجے میں اس طرح کا خوشگوار ماحول بنانا از حد لازمی ہے تاکہ طلبہ کھل کر اپنے استاد سے سوالات کر سکیں، ان سے نئی باتوں کی بابت پوچھ سکیں، توجہ اور انہماک کے ساتھ استاد کی باتیں سنیں۔ بلیک بورڈ پر جو کچھ سبق سے متعلق لکھا جائے، اسے وہ ہو بہو نقل کر سکیں۔

بعض اساتذہ جماعت میں داخل ہوتے ہی چہرے پر خشونت کے آثار طاری کر لیتے ہیں جس سے بچے سہم جاتے ہیں۔ اس پر سے مستزاد یہ کہ وہ حد درجہ سنجیدہ اور بارعب لہجہ اپنا لیتے ہیں جس کے سبب استاد اور طلبہ کے بیچ ایسا خوشگوار ماحول نہیں بن پاتا جو پڑھنے پڑھانے کے لیے ضروری ہوتا ہے۔ طلبا میں سیکھنے کا شوق اور خود اعتمادی پیدا کرنے کے لیے ان کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ ان کے کام کی وقتاً فوقتاً تعریف کی جائے۔ بچے مناسب شاباشی سے تحریک پاتے ہیں اور ان کے اندر مزید سیکھنے کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ ایک کامیاب استاد وہی ہے جو طالب علموں کو اپنے سحر میں رکھے۔ ان کے دلوں میں اپنے لیے

احترام پیدا کرے۔ طلبہ کے اندر تجسس کو اُبھارے۔ انھیں محنت کرنے پر آمادہ کرے۔ بات بات پر ڈانٹنا، پھٹکارنا، سُست، کاہل اور کام چور جیسے الفاظ استعمال کرنے سے حوصلے پست ہوتے ہیں اور ذہین بچے بھی کند ذہن ہونے لگتے ہیں۔ جیسا کہ عرض کیا گیا کہ بچے سے غلطیاں ہوں گی ہی لیکن ایک کامیاب استاد کا کام ہے کہ وہ ان کی مسلسل اصلاح کرتا رہے۔ وہ غلطیوں پر انھیں نرم لہجے میں سمجھائے۔ انھیں اچھے بُرے کی تمیز سکھائے۔ اس سلسلے میں وہ مثالیں بھی دے کہ کیسے ایک لڑکا اپنی محنت اور لگن سے کامیاب ہوتا ہے اور اپنا اور ملک کا نام روشن کرتا ہے۔ نیز کس طرح ایک سست، ضدی اور بدمعاش لڑکا اپنے ناکارہ پن کے سبب کچھ نہیں بن پاتا اور آگے چل کر در در کی ٹھوکریں کھاتا ہے۔

جماعت میں جو طلبہ ہوتے ہیں وہ مختلف طبقات سے تعلق رکھتے ہیں۔ اس لیے ان کی ذہنی سطح ایک نہیں ہوتی۔ استاد کا فریضہ یہ ہے کہ وہ بچوں کی ذہنی سطح کو ملحوظ رکھتے ہوئے ان کی تربیت کرے۔ ساتھ ہی وہ کمزور بچے پر خصوصی توجہ دے تا کہ وہ بھی رفتہ رفتہ اپنے ہم جماعتوں کی برابری میں آسکے۔

استاد کو کلاس روم میں ایک ہی لب و لہجہ اور گھسا پٹا انداز نہیں اپنانا چاہیے۔ کبھی ہنسنا، کبھی بولنا، کبھی لطیفے اور کبھی کہانیاں سنانا بھی ضروری ہے تا کہ بچے کی تفریح بھی ہو اور اسی بہانے وہ سیکھتا بھی رہے۔ استاد کو چاہیے کہ وہ درس کے دوران طلبہ سے سوالات کرے اور انھیں بولنے پر اُکسائے۔ اس طرح اُن کی گویائی کی صلاحیت میں اضافہ ہوگا۔ استاد مشکل کو آسان بنانے کے لیے ہے نہ کہ آسان کو مشکل بنانے کے لیے۔ اس لیے لازمی ہے کہ استاد جس موضوع کو پڑھا یا سمجھا رہا ہو، اس کی جزئیات پر بھی اس کی گہری نظر ہو۔ جیسا کہ عرض کیا گیا وہ پوری جماعت پر نظر تو رکھے ہی، ساتھ ہی انفرادی طور پر بھی کمزور بچوں پر توجہ دے۔ استاد کو ہر دم اپنی ذمّے داریوں کا احساس ہونا چاہیے تب ہی جا کر درس و تدریس کا مقصد پورا ہوگا۔ کیوں کہ طلبہ قوم کی امانت ہی نہیں ملک کا مستقبل بھی ہوتے ہیں۔ اگر درس و تدریس میں خامی رہی تو آگے چل کر اس کا نتیجہ بہت ہی ضرر رساں ہوگا۔

درجہ نہم تا دہم

تمہید

آٹھویں جماعت کی تکمیل کے بعد طلبہ اردو بولنے، پڑھنے اور لکھنے کے ساتھ زبان و ادب کے مبادیات سے بھی واقف ہو جاتے ہیں۔ اب ان کے شعور کی بالیدگی پر توجہ دینے کی ضرورت ہوتی ہے۔ نیز نصابی مشمولات کے ایسے پہلوؤں پر ان کی توجہ مبذول کرانی چاہیے جو ان کی شخصیت کی تعمیر و ترتیب میں معاون ہو سکیں۔

نویں اور دسویں جماعت کے طلبا کی علمی اور فکری سطح اس درجہ ہوتی ہے کہ وہ شعر و ادب کے بنیادی اور فنی لوازمات کو قبول کر سکے۔ اساتذہ کو چاہیے کہ درسی کتاب میں شامل اشعار اور جملوں کے حسن و قبح پر بھی سہل انداز میں روشنی ڈالیں۔ موضوع اور مواد کے لحاظ سے نصاب کی تیاری میں یہ ملحوظ رہنا چاہیے کہ مشمولات کی حیثیت علم محض کی نہ ہو بلکہ وہ طلبہ کے معیار کو بحیثیت انسان بھی بلند کرے۔ ان مقاصد کے تحت درج ذیل نکات پر خصوصی توجہ ہونی چاہیے:

(۱) زبان کے درست اور مؤثر استعمال کا شعور پیدا کرنا۔

(۲) ذخیرۂ الفاظ میں بتدریج اضافہ کرنا اور ایسے مواقع فراہم کرانا کہ وہ لفظوں کے استعمال کے عملی تجربے سے گزر سکیں۔ مثلاً تحریری و تقریری مقابلے، شعر خوانی اور بیت بازی وغیرہ۔

(۳) ادبی ذوق، تخلیقی صلاحیت اور انتقادی شعور کو پروان چڑھانا۔

(۴) اردو قواعد کے اصولوں کو نصابی مشمولات کی اساس پر سمجھانا۔

(۵) اسباق کی تشریح اور ان کے تجزیے کی تفہیم

(۶) ادب کی موضوعی اور ہیئتی صنفوں کی پہچان کرانا۔

(۷) اسباق کے مطالب اور مرکزی خیال اخذ کرنے کی صلاحیت پیدا کرنا۔

(۸) جملوں کی ادائیگی میں تلفظ اور رموزِ اوقاف پر توجہ دلانا۔

(۹) اسباق کے مصنفین اور شعرا کے حالات اور ان کی خدمات کے تئیں دلچسپی پیدا کرنا۔

طریقۂ تدریس

اساتذہ کو کلاس روم میں درس و تدریس کی خوش گوار فضا قائم کرنی چاہیے تاکہ طلبہ کوئی دباؤ یا تناؤ نہ محسوس کریں۔ ان درجات کے طلبہ میں خود اعتمادی اور بعض اوقات خود نمائی کا جذبہ زیادہ ہوتا ہے۔ اساتذہ کو چاہیے کہ ان کی خامی اور لاعلمی کی نشاندہی کرتے ہوئے ہمدردانہ اور مشفقانہ رویوں کو اپنائیں۔ تضحیک اور تشنیع سے گریز کریں۔

طلبہ کی علمی کوششوں اور سرگرمیوں پر ان کی حوصلہ افزائی کرنا چاہیے تاکہ وہ آزادانہ طور پر اپنے خیالات کا اظہار کر سکیں۔ طلبہ کے ساتھ اساتذہ کو یکساں سلوک کرنا چاہیے۔ شعری حصے کی تدریس میں آہنگ اور نثری حصے کی تدریس میں رموزِ اوقاف کا لحاظ ضروری ہے۔ اسباق میں مستعمل ایسے الفاظ جن کی اِملا تدریجی عمل سے گزری ہو، ان کی نشاندہی بھی کرنی چاہیے۔ قواعد کی تدریس میں نصابی مشمولات سے مثالیں فراہم کرانی چاہئیں۔ اس طرح طلبہ قواعد کے اضافی بوجھ کی نفسیات کا شکار بھی نہیں ہوں گے اور درسی اسباق کی تفہیم بھی سہل ہو جائے گی۔

تقسیمِ اعداد

درجہ نہم و دہم (IX & X)

۱- درسی کتاب حصۂ نظم	15	=	(5+6+4)
۲- درسی کتاب حصۂ نثر	15	=	(5+6+4)
۳- معاون درسی کتاب	18	=	(8+5+5)
۴- قواعد	18	=	(5+5+5+3)
۵- مضمون نویسی	08		
۶- خط نویسی یا عرضی نویسی	08		
۷- پیراگراف نویسی	06		
۸- غیر نصابی متن اور اس سے متعلق سوالات	06		
۹- غیر نصابی متن (نثر یا نظم) کی تشریح	06		
	100		

ہدایات

(۱) درسی کتاب سے حصۂ نظم اور حصۂ نثر سے پانچ علاحدہ معروضی سوالات (5+5=10) نمبر کے پوچھے جائیں گے۔ حصۂ نظم اور نثر کے اسباق سے متعلق علاحدہ علاحدہ (6+6=12) نمبر کے متن سے واقفیت کو نگاہ میں رکھتے ہوئے سوالات پوچھے جائیں گے۔ حصۂ نظم اور نثر سے علاحدہ علاحدہ تشریح کی غرض سے (4+4=08) نمبر کے سوالات پوچھے جائیں گے۔

(۲) معاون درسی کتاب سے 08 نمبر کے معروضی سوالات پوچھے جائیں گے۔ اس کے علاوہ (5+5=10) نمبر کے دو سوالات معاون درسی کتاب کے متن سے پوچھے جائیں گے۔

(۳) قواعد سے 5 (جنسیت یا محاورات وضرب الامثال)، 5 (واحد وجمع)، 5 (اضداد) اور 3 (تعریفات) = 18 نمبر کے سوالات پوچھے جائیں گے۔

(۴) مضمون نویسی کے لیے 08 نمبر مخصوص ہوگا۔ اسی طرح خط نویسی یا درخواست نویسی کے لیے بھی 8 نمبر مخصوص ہوں گے۔

(۵) کسی موضوع کے تعلق سے ایک مختصر پیراگراف لکھنے کے لیے 6 نمبر مخصوص ہوں گے۔ کسی غیر نصابی متن (Unseen) پر 06 نمبر کے معروضی سوالات پوچھے جائیں گے۔

(۶) کسی غیر نصابی متن (Unseen) میں نثر یا نظم کے اقتباسات پیش کر کے ان کی تشریح کرائی جائے گی۔ اس کے لیے 06 نمبر مخصوص ہوں گے۔

(۷) ہر سوال کے لیے متعدد متبادل سوالات (کم از کم چار) ضرور دیئے جائیں گے۔

نصابی کتابوں کے خاکے

درجہ IX

نثر:

تین افسانے
دو دوسری زبانوں کی کہانیاں
تین علمی مضامین
ایک طبّی مضمون (بلڈ پریشر اور ذیابیطس وغیرہ پر)
داستان سے اقتباس
خودنوشت سے اقتباس
انشائیہ
یادنگاری
خطبہ
سوانح
تنقید
سفرنامہ
متعدد نثری اصناف سے مثالیں

شاعری:

حمد
طویل نظم سے اقتباس
ظریفانہ نظم
قطعات
ایک گیت
پانچ غزلیں
ایک مرثیہ
ایک قصیدہ
ایک مختصر مثنوی یا طویل مثنوی کا منتخب حصہ
چھ رباعیات
دیگر شعری اصناف سے مثالیں

درجہ X

نثر:

تین علمی مضامین (۲+ ایک فاصلاتی نظامِ تعلیم کی اہمیت پر)
ایک ظریفانہ مضمون
تین افسانے
دو غیر ملکی زبانوں کی کہانیاں
ایک ڈراما
ناول سے اقتباس
انٹرویو
خطبہ
ایک خاکہ
تین مکاتیب
چند نثری اصناف کے نمونے

شاعری:

نعت
نظمیں
ایک مزاحیہ نظم
نثری نظمیں
غزلیں چھ (پانچ + ایک مزاحیہ غزل)
شہر آشوب = ایک
مثنوی = ایک
رباعیات = آٹھ
دوہے = ۲۰ (دو شاعروں کے دس دس دوہے)
دوسری شعری اصناف سے حسب ضرورت مثالیں

انسانی اقدار اور دیگر موضوعات

کفایت شعاری، منصوبہ بندی، معروضیت، عقلیت، دنیا میں ہندستان کی اہمیت، انسانی حقوق اور فرائض ، جدید ایجادات، آبادی کا مسئلہ، ذمہ دار شہری، سائنسی ترقیات، عہد قدیم کا ہندستان، جنگ آزادی

قواعد کے اجزاء

برائے درجہ نہم و دہم

(۱) کلمہ اور اس کی قسمیں
(۲) اسم اور اس کی قسمیں
ضمیر اور اس کی قسمیں
(۳) صفت اور اس کی قسمیں
(۴) فعل اور اس کی قسمیں
فعل ماضی اور اس کی قسمیں
متعلق فعل
(۵) جملہ اور اس کی قسمیں
(۶) حروف ربط، عطف، تخصیص، فجائیہ
(۷) سابقے اور لاحقے
(۸) مترادفات
(۹) محاورے اور ضرب الامثال
(تعریف اور جامع فہرست)
(۱۰) اعراب کے فرق سے معنی کا فرق
(۱۱) اضداد کی جامع فہرست
(۱۲) واحد جمع کی جامع فہرست
(۱۳) اعراب، علامات اور ان کا استعمال
(۱۴) مطلع، حسن مطلع، قافیہ، ردیف اور مقطع کی تعریف
(۱۵) مختلف اصنافِ ادب (نثر اور نظم)
(۱۶) خطوط نویسی
(۱۷) مضمون نگاری

معاون درسی کتابیں

Supplementary Readers

طلبہ کی گوناگوں دلچسپیوں میں اضافہ کی غرض سے درسی کتابوں کے ساتھ خصوصی موضوعات پر مختصر معاون درسی کتابوں کی ضرورت کو محسوس کرتے ہوئے چھٹی سے بارہویں جماعت تک ہر سطح پر ایک ایک معاون درسی کتاب شامل نصاب کی گئی ہے۔ طلبہ کی ضرورتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے ان کے موضوعات اور دائرۂ کار کا تعین کیا گیا ہے۔

برائے درجہ نہم : ہندستان کی قومی تحریک کی تاریخ

اسکولی تعلیم میں قومی تحریک کی تاریخ بار بار اور مختلف جہات سے پڑھانے کا ایک مقصد یہ ہے کہ طالب علم اپنے ملک کی تعمیر نو کے مسائل و مباحث سے کما حقہ واقف ہوسکیں۔ نویں کلاس میں ہندستان کی قومی تحریک کی مختصر تاریخ شامل کرتے ہوئے اس بات کا بھی خیال رکھا گیا ہے کہ بہار میں خاص طور پر جو سرگرمیاں رہیں، انھیں بھی خصوصی اہمیت دے کر واضح کیا جائے۔

کتاب کا خاکہ

(۱) ہندستان میں انگریزوں کی آمد اور مغلیہ سلطنت کا زوال

(۲) 1857 کا انقلاب

(۳) سماجی اور تعلیمی تحریکیں

(۴) انڈین نیشنل کانگریس کی بنیاد

(۵) مسلم لیگ اور دیگر سیاسی جماعتوں کی بنیاد

(۶) خلافت تحریک

(۷) تحریکِ ترکِ موالات

(۸) تحریکِ عدم تعاون

(۹) مہاتما گاندھی کی قیادت میں قومی تحریک کی سرگرمیاں

(۱۰) بھگت سنگھ اور دیگر انقلابی رہنما

(۱۱) بھارت چھوڑو تحریک

(۱۲) تقسیم ملک اور آزادی

(۱۳) بہار میں قومی تحریک کے مختلف پڑاؤ

(الف) 1857 کا انقلاب

(ب) سنتھال بغاوت

(ج) چمپارن ستیہ گرہ

(د) خلافت تحریک

(ہ) 1942 کی تحریک

(۱۴) کانگریس اور مسلم لیگ کی سیاست

(۱۵) فرقہ وارانہ فسادات

برائے درجہ دہم : بیسویں صدی کا ہندستانی ادب

دسویں کلاس میں بچوں کی ادبی تربیت کی غرض سے غیر اردو زبانوں کے تخلیقی ادب کا ایک انتخاب معاون درسی کتاب کے طور پر نصاب میں شامل کیا گیا ہے۔ اپنی تعلیمی زندگی میں طلبہ اردو، ہندی اور انگریزی کے ادب سے تو واقف ہو جاتے ہیں لیکن ہندستان جیسے کثیر لسانی معاشرے کے بارے میں ان کے پاس زیادہ جانکاری نہیں ہوتی۔ اس کتاب کا مقصد اس طرح سے قائم ہوگا کہ ہندستان کی تمام اہم زبانوں کے افسانے اور منتخب شاعری واضح تعارفات کے ساتھ درج نصاب ہوں۔ اس کتاب کو پڑھنے کے بعد دسویں میں پڑھنے والا ہمارا طالب علم ہندستانی سماج کی رنگا رنگ تہذیبی، ثقافتی اور ادبی کیفیتوں سے واقف ہو سکے گا۔

کتاب کا خاکہ

۱- ہندستانی ادب کا تصور

۲- کہانیاں :

(الف) تکشی شیوشنکر پلّے (ملیالم)

(ب) پنالال پٹیل (گجراتی)

(ج) یو.آر.اننت مورتی (کنڑ)

(د) مہا شویتا دیوی (بنگلہ)

(ہ) اندرا گوسوامی (آسامی)

(و) گووند جھا (میتھلی)

(ز) دیگر زبانوں کی کہانیاں بھی شامل کی جا سکتی ہیں۔

۳- شاعری :

(الف) امرتا پریتم (پنجابی)

(ب) ارون کلکر (مراٹھی)

(ج) سیتا کانت مہا پاتر (اڑیا)

(د) ششیندر شرما (تلگو)

(ہ) کے.سچد انندن (تلگو)

(و) دوسری زبانوں کے شعری ادب کے تراجم کو بھی حسب ضرورت کتاب میں شامل کیا جا سکتا ہے۔

1.3 মাতৃভাষা বাংলা

শ্রেণি IX – X

ভূমিকা (Introduction)

এই পাঠ্যক্রমের মাধ্যমে বাংলা ভাষা শেখার এক বিস্তৃত ও সুদৃঢ় পরিকাঠামো গঠন করার চেষ্টা করা হয়েছে। মানুষের ভাব-বিনিময়ের প্রধান মাধ্যম ভাষা। কেবলমাত্র ভাবের আদান-প্রদানই নয় ভাষার মাধ্যমেই আমরা বিষয়ের জ্ঞান আহরণ করি। এখানে ভাষা শিক্ষায় দুটি বিষয়ের উপর বিশেষভাবে লক্ষ্য রাখা হয়েছে। প্রথমত, অতি সহজ ও সরলভাবে ভাষা শেখা। দ্বিতীয়ত, পড়ানোর সময় ব্যাকরণের চেয়ে বিষয়বস্তুর উপর প্রাধান্য দেওয়া।

প্রাথমিকের গণ্ডি পেরিয়ে শিক্ষার্থী মাধ্যমিকের শেষ ধাপ অর্থাৎ নবম ও দশম শ্রেণিতে উত্তীর্ণ হয়েছে। এই স্তরে এসে একজন শিক্ষার্থী মোটমুটি ভাবে আত্মবিশ্বাসে প্রতিষ্ঠিত হয়। তারমধ্যে ব্যক্তিক, সামাজিক ও রাজনৈতিক চেতনার উন্মেষ ঘটেছে। প্রয়োজনে নিজের মতামত ব্যক্ত করার দক্ষতা অর্জন করেছে।

কেবলমাত্র কথা বলা বা লেখা-পড়া শেখাই নয় বিশ্ব-ব্রহ্মাণ্ডের অগণিত জ্ঞান ও সৌন্দর্যবোধের সঙ্গেও পরিচিত হতে হবে এবং তার প্রধান বাহন সাহিত্য।

সাহিত্যের বিভিন্ন অঙ্গ যেমন - গল্প, পদ্য, প্রবন্ধ, নাটক প্রভৃতির রসাস্বাদনের যোগ্যতা অর্জন করতে হবে। একই সঙ্গে কেবলমাত্র ভাষার শুদ্ধতা বা সঠিক প্রয়োগই নয় পাঠের মধ্যদিয়ে চারিত্রিক বৈশিষ্ট্য ও সৃজনাত্মক প্রতিভার বিকাশই মুখ্য উদ্দেশ্য।

সাহিত্য বিশ্ব ভ্রাতৃত্বের প্রধান ধারক ও বাহক। বাংলাভাষার সাহিত্য কেবল আত্মিক বন্ধন ও মিলনের পথ-নির্দেশই দেয় না এই স্তরে এসে শিক্ষার্থীর নিজেকে প্রতিষ্ঠিত করার চেতনা বৃদ্ধি পায়।

মাতৃভাষা বাংলা

সাবলীল ভাবপ্রকাশের সর্বশ্রেষ্ঠ মাধ্যম মাতৃভাষা। ব্যক্তির চিন্তাভাবনা ও বুদ্ধিবৃত্তির সর্বাঙ্গীন বিকাশের শ্রেষ্ঠ মাধ্যমও এই মাতৃভাষা। মা, মাতৃভাষা ও মাতৃভূমি এই তিনটি যেন সমার্থক শব্দ। মাতৃভাষায় রচিত সাহিত্য সম্পদই আমাদের জাতীয় জীবনকে, জাতীয় শক্তি ও ঐতিহ্যকে শক্তিশালী ও চেতনা সম্পন্ন করে তোলে। জাতীয়তা বোধের মধ্যে থাকে না কোন সংকীর্ণতা। এটি সামাজিক ও মানবিক সম্পর্কের বন্ধনকে করে তোলে সুদৃঢ়। অপরদিকে আমাদের জ্ঞানভাণ্ডারকে সমৃদ্ধ করতে মাতৃভাষার সঙ্গে অন্যান্য ভাষার অনুশীলনও করা আবশ্যক।

শিক্ষার উদ্দেশ্য (Educational objectives)

* বাংলা ভাষার মাধ্যমে বাংলা সংস্কৃতি ও সাহিত্যের মূল প্রকৃতির পরিচয় লাভ করা এবং সেটি সংরক্ষণ করার জন্য উদ্বুদ্ধ হওয়া ।
* শুদ্ধ সহজ বাংলায় নিজের ভাব প্রকাশ করা এবং অন্যের প্রকাশিত ভাবকে সঠিকভাবে বুঝে নিয়ে তা মৌখিক ও লিখিত ভাবে নিজের ভাষায় প্রকাশ করার দক্ষতা অর্জন করা ।
* বাংলা ভাষার ব্যাকরণ, রচনা, বিজ্ঞপ্তি, প্রতিবেদন এবং প্রয়োগ পদ্ধতি ও মৌলিক রচনা লেখার দক্ষতা অর্জন করা ।
* বাংলার শব্দ ভাণ্ডার সঞ্চয় ও প্রয়োগ বৃদ্ধি করা ।
* সাহিত্যের বিভিন্ন অঙ্গের সঙ্গে পরিচিত হওয়া ।
* বাংলা সাহিত্যের সম্পদ ও ঐতিহ্য সম্বন্ধে সচেতন হওয়া ও তার রসাস্বাদনের যোগ্যতা অর্জন করা ।
* বাংলা ভাষা ও লিপির সঠিক প্রয়োগ সম্বন্ধে সচেতন ও সতর্ক হওয়া ।
* সঞ্চার মাধ্যম (প্রিন্ট ও ইলেক্ট্রনিক্), বিশ্বকোষ, অভিধান ইত্যাদি থেকে তথ্য সংগ্রহ করে জ্ঞানবৃদ্ধি করা এবং গ্রন্থাগার ব্যবহারে অভ্যস্ত হওয়া ।

শিক্ষার্থীর কাছে প্রত্যাশা (Expectation from Students)

* নবম ও দশম শ্রেণীর শিক্ষার্থীরা বাংলা ভাষা, সাহিত্য ও সংস্কৃতি সম্বন্ধে আগের ক্লাসে মোটামুটি অবগত হয়েছে । এই পর্যায়ে এসে তারা নিম্নোক্ত বিষয়গুলিতে মোটামুটি পাঠের মাধ্যমে দক্ষতা অর্জন করেছে —
* সাহিত্যের বিভিন্ন ক্ষেত্রে তার সাবলীলতা
* ভাষার উপর দক্ষতা
* ভাষার সৌন্দর্যবোধের চেতনা ।
* প্রচার মাধ্যমগুলির সঙ্গে পরিচিত হওয়া ।
* বাচন শৈলী ও উপযুক্ত ভাষার প্রয়োগ করা, এই স্তরে এসে বাংলা সাহিত্য ও

সংস্কৃতির সঙ্গে সম্পর্ক আরো নিবিড় হয়ে উঠবে, আত্মবিশ্বাস ও দৃঢ় থেকে দৃঢ়তর হবে যাতে সে ভবিষ্যতে একজন সফল ও শ্রেষ্ঠ নাগরিক হতে পারে ।

মাধ্যমিক স্তরে শিক্ষকের ভূমিকা

যুগ-পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে সমাজে শিক্ষার্থী ও শিক্ষকের ভূমিকায় আমূল পরিবর্তন এসেছে। বর্তমানে শিক্ষক শিক্ষার্থীর মাতৃ–পিতৃ তুল্যই নয় বন্ধুসম ।

* তিনি ক্লাসে শিক্ষার্থীর আচরণকে মনোবিজ্ঞান সম্মত ভাবে পরিচালিত করবেন ।
* ভাবগম্ভীর বিষয়বস্তুকে সরস করে পরিবেশন করার জন্য শিক্ষকের সূক্ষ্ম রসবোধ বাঞ্ছনীয় ।
* শিক্ষার্থীর মধ্যে স্বাধীন চিন্তাশক্তির বিকাশে শিক্ষকের ভূমিকা অনস্বীকার্য ।

শ্রেণি IX, X

পাঠ্য পুস্তক

নবম ও দশম শ্রেণির জন্য দুটি আলাদা আলাদা গদ্য ও পদ্য সংকলনের একটি করে পাঠ্যপুস্তক থাকবে। দুটি শ্রেণিতেই 24 থেকে 26টি পাঠ সংকলিত থাকবে। কাব্য সংকলনে আদিযুগের একটি, মধ্যযুগের দুইটি ও অবশিষ্ট আধুনিক যুগের কবিতা সংকলিত থাকবে। বিভিন্ন বিষয় ও আঙ্গিকের কবিতা যেন থাকে সেদিকে বিশেষ দৃষ্টি দিতে হবে। গদ্য সংকলনে ভাষা ও সাহিত্যের ইতিহাস, গল্প, ভ্রমণ কাহিনী, নাট্যাংশ প্রহসন, আত্মজীবনী প্রভৃতি সাহিত্যের বিভিন্ন অঙ্গের রচনা অবশ্যই সংকলিত থাকবে।

একটি সহযোগী পাঠ্য পুস্তক থাকবে। নবম শ্রেণীর জন্য গল্প সঞ্চয়ন ও দশম শ্রেণীর জন্য রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের কথা ও কাহিনী।

পাঠ্য বিষয়

* সমাজবাদ
* স্বাধীনতা সংগ্রাম
* জাতীয় সংহতি ও সমন্বয়
* ধর্ম নিরপেক্ষতা
* বিশ্ব মৈত্রী চেতনা
* পরিবেশ সচেতনতা
* আধুনিক বৈজ্ঞানিক তথ্য নির্ভর পাঠ (ইন্টারনেট)
* অনুবাদ সাহিত্য (দেশী ও বিদেশী ভাষা থেকে)
* অভিযান (অন্তরীক্ষ, আর্ন্টাকটিকা)

পাঠ্যপুস্তকে বিভিন্ন আদর্শের পরিপুষ্টকারী লেখা যাতে সংকলিত হয় সেদিকে দৃষ্টি রাখতে হবে। উক্ত আদর্শের বিরোধী কোনো রচনা সন্নিবেশিত করা চলবে না। সংকলনের বিষয় ও লেখক নির্বাচনে বিহারের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখতে হবে। সেইসঙ্গে কবি ও লেখকদের সংক্ষিপ্ত পরিচয়ও সংযুক্ত থাকবে।

(উপরোক্ত নিয়মাবলীর আধারে নবম ও দশম শ্রেণির জন্য দুটি আলাদা আলাদা পাঠ্যপুস্তক থাকবে।)

শ্রেণি IX

পাঠ্য সূচি (Contents) ঃ—

(ক) লিখিত

বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের মূল পাঠ্যপুস্তক

(পদ্য ও গদ্য সংকলন)

পদ্য — 12 টি পাঠ

গদ্য — 14 টি পাঠ

সহযোগী পাঠ্য পুস্তক, গল্প সঞ্চয়ন (আধুনিক যুগের পাঁচটি গল্প সংকলন)

ব্যাকরণ ও নির্মিত (Composition)

* বিশেষ্য ও বিশেষণের পারস্পরিক রূপান্তর
* ক্রিয়ার কাল ও রূপ (সাধারণ বর্তমান, সাধারণ অতীত ও সাধারণ ভবিষ্যৎ, ঘটমান বর্তমান কাল, ঘটমান অতীত কাল ও ঘটমান ভবিষ্যৎ কাল, পুরাঘটিত বর্তমান কাল, পুরাঘটিত অতীত কাল)
* উপসর্গ
* সমাস
* প্রবাদ বাক্য
* বহুপদের একপদের পরিবর্তন
* বিপরীতার্থক শব্দ
* সাধু ও চলিত ভাষা
* হিন্দী ও বাংলা বানানের পার্থক্য
* পত্রলেখন (আবেদন পত্র, সম্পাদকীয় পত্র)
* বিজ্ঞপ্তি (Notice)
* অনুচ্ছেদ লেখন

(খ) মৌখিক

* সংবাদ পাঠ

সম্মিলিত আলোচনা (Group discussion)

* বক্তৃতা
* পাঠ্য বহির্ভূত বিষয়ের জ্ঞান
* বাদ-বিবাদ

শ্রেণি X

পাঠ্যসূচি

(ক) লিখিত

বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের মূল পাঠ্যপুস্তক

(পদ্য ও গদ্য সংকলন)

পদ্য — 12টি পাঠ

গদ্য — 14টি পাঠ

পঠিত পাঠ

কথা ও কাহিনী — রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

কথা থেকে —

শ্রেষ্ঠ ভিক্ষা, প্রতিনিধি, ব্রাহ্মণ, সামান্য ক্ষতি, স্পর্শমণি, প্রার্থনাতীত দান

কাহিনী থেকে — পুরাতন ভৃত্য, দুই বিঘা জমী ।

ব্যাকরণ ও নির্মিতি (Composition)

* বাংলা ভাষার শব্দভাণ্ডারের শ্রেণি বিভাগ (তৎসম, অর্ধতৎসম, তদ্ভব, দেশি, বিদেশি)
* সমাস
* কৃৎ ও তদ্ধিত প্রত্যয় সম্বন্ধে প্রাথমিক জ্ঞান, বিশেষ করে বাংলা কৃৎ ও তদ্ধিত প্রত্যয় ।
* প্রবাদ বাক্য
* বহুপদের একপদে পরিবর্তন, সমোচ্চারিত শব্দ,
* হিন্দী থেকে বাংলায় একই শব্দ ও বাক্যাংশের প্রয়োগ পদ্ধতির পার্থক্য
* প্রতিবেদন (Reporting)
* আবেদন পত্র
* সম্পাদকীয় পত্র
* অনুচ্ছেদ লেখন

শ্রেণী IX

পরীক্ষা পদ্ধতির বিশদ বিবরণ (Examination specification)

প্রশ্নপত্রটিকে পাঁচ ভাগে ভাগ করা হয়েছে। প্রতিটি ভাগের পাশে সংখ্যা নির্ধারিত করা হলো।

1.	পাঠ্য বহির্ভূত গদ্যাংশ	20
2.	অনুচ্ছেদ লেখন ও নির্মিতি	10
3.	ব্যাকরণ	15
4.	(ক) পাঠ্য পুস্তক	25
	(খ) সহযোগী পাঠ্য পুস্তক	10
5.	মৌখিক	20

1. পাঠ্য বহির্ভূত গদ্যাংশ সাহিত্য-ধর্মী গদ্যাংশ হবে। প্রশ্নাবলী – উপযুক্ত শীর্ষক, বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন, সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন, অতি সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন। প্রতিটি প্রশ্নের জন্য নির্ধারিত মান 4 হবে।

2. (ক) অনুচ্ছেদ লেখন — সমসাময়িক ও বিভিন্ন বিষয়ের উপরে অনুচ্ছেদ লেখন। নির্ধারিত মান 5 হবে।

(খ) নির্মিতি — পত্র লেখন (আবেদন পত্র ও সম্পাদকীয় পত্র), বিজ্ঞপ্তি (Notice)। নির্ধারিত মান 5 হবে।

3. ব্যাকরণ — ব্যাকরণ থেকে তিনটি প্রশ্ন দেওয়া হবে। প্রতিটি প্রশ্নের মান 5+5+5=15

ব্যাকরণের মুখ্য বিন্দু

4. পাঠ্যপুস্তক — (ক) গদ্যাংশ ও পদ্যাংশের থেকে মোট 25 নম্বরের প্রশ্ন থাকবে।

(i) পদ্যাংশ থেকে তিনটি সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন দেওয়া হবে 2+2+2=6

(ii) নির্ধারিত কবিতাগুলি থেকে বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন দুটি থাকবে । 3+3=6

(iii) গদ্যাংশ থেকে সংক্ষিপ্ত তিনটি প্রশ্ন থাকবে । 2+2+2=6

(iv) গদ্যাংশ থেকে বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন দুটি থাকবে । $3\frac{1}{2} \times 2 = 7$

(খ) সহযোগী পাঠ্য পুস্তক — (i) সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন দুটি থাকবে । 2+2=4

(ii) বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন দুটি থাকবে । 3+3=6

শ্রেণী X

পরীক্ষা পদ্ধতির বিশদ বিবরণ (Examination specification)

প্রশ্ন পত্রটিকে পাঁচ ভাগে ভাগ করা হয়েছে । প্রতিটি ভাগের পাশে সংখ্যা নির্ধারিত করা হলো ।

1.	পাঠ্য বহির্ভূত গদ্যাংশ	20
2.	অনুচ্ছেদ লেখন ও নির্মিতি	15
3.	ব্যাকরণ	15
4.	পাঠ্য পুস্তক	40
5.	সহায়ক পাঠ্যপুস্তক	10

1. পাঠ্য বহির্ভূত গদ্যাংশ — সাহিত্য–ধর্মী গদ্যাংশ হবে ।

প্রশ্নাবলী — উপযুক্ত শীর্ষক, বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন, সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন, অতি সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন । প্রতিটি প্রশ্নের জন্য নির্ধারিত মান 4 হবে ।

2. (ক) অনুচ্ছেদ লেখন — সমসাময়িক ও বিভিন্ন বিষয়ের উপরে অনুচ্ছেদ লেখন । নির্ধারিত মান 10 হবে ।

(খ) নির্মিতি — পত্র লেখন (আবেদন পত্র ও সম্পাদকীয় পত্র) প্রতিবেদন নির্ধারিত মান 5 হবে ।

3. ব্যকরণ — ব্যাকরণ থেকে তিনটি প্রশ্ন দেওয়া হবে ।

প্রতিটি প্রশ্নের মান 5 + 5 + 5 = 15

4. পাঠ্যপুস্তক — গদ্যাংশ ও পদ্যাংশ থেকে মোট 40 নম্বরের প্রশ্ন থাকবে ।

(i) পদ্যাংশে সংক্ষিপ্ত ও বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন থাকবে । মোট 20 নম্বরের প্রশ্ন হবে ।

(ii) গদ্যাংশে সংক্ষিপ্ত ও বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন মোট 20 নম্বরের থাকবে ।

5. (i) সহযোগী পাঠ্য পুস্তক — রবীন্দ্রনাঠ ঠাকুরের কথা ও কাহিনী থেকে দুটি বস্তুনিষ্ঠ প্রশ্ন থাকবে । তারমধ্যে যে কোনো একটির উত্তর দিতে হবে । প্রশ্নের মান 4

(ii) সংক্ষিপ্ত তিনটি প্রশ্ন থাকবে 2 + 2 + 2 = 6